कक्षा- एम० ए० हिंदी द्वितीय सेमेस्टर

डॉ० अमित कुमार, असिस्टेंट प्रोफेसर

हिंदी विभाग, हरिश्चंद्र स्नातकोत्तर महाविद्यालय वाराणसी।

'नाट्य तत्वों के आधार पर भीष्म साहनी कृत हानूश नाटक का मूल्यांकन'

भीष्म साहनी आधुनिक गद्य साहित्य के विशिष्ट लेखक हैं। उन्होंने हिंदी गद्य साहित्य को उपन्यास,कहानी और नाटकों से बहुविध समृद्ध किया है। भीष्म साहनी का जन्म 08 अगस्त 1915 को रावलपिंडी में हुआ था। उनकी प्रारंभिक शिक्षा घर पर ही सम्पन्न हुई तत्पश्चात् उन्होंने गवर्नमेंट कॉलेज लाहौर से अंग्रेजी साहित्य में एम.ए.किया और पंजाब विश्वविद्यालय से पीएच० डी० की उपाधि प्राप्त की। भीष्म साहनी बहुआयामी व्यक्तित्व से सम्पन्न रचनाकार हैं इसलिए वे 'इप्टा' नाट्य मंडली और प्रगतिशील लेखक संगठनों से जुड़े थे।

हानूश भीष्म साहनी का पहला और चर्चित नाटक है।इसका प्रकाशन सन् 1977 में हुआ।इस नाटक को लिखने की वजह बहुत दिलचस्प है जिसे नाटक की भूमिका में स्वयं भीष्म साहनी ने रेखांकित किया है कि -"बहुत दिन पहले, लगभग 1960 के आस-पास मुझे चेकोस्लोवाकिया की राजधानी प्राग में जाने का सुअवसर मिला था।... मेरे मित्र निर्मल वर्मा उन दिनों वहीं पर थे, और चेक भाषा तथा संस्कृति की उन्हें ख़ासी जानकारी थी। सड़कों पर घूमते - घामते एक दिन उन्होंने मुझे एक मीनारी घड़ी दिखाई जिसके बारे में तरह-तरह की कहानियां प्रचलित थीं कि यह प्राग में बनाई जाने वाली पहली मीनारी घड़ी थी, और इसके बनानेवाले को उस समय के बादशाह ने अजीब तरह से पुरस्कृत किया था। बात मेरे मन में कहीं अटकी रह गई, और समय बीत जाने पर भी यदा-कदा मन को विचलित करती रही। आखिर मैंने इसे नाटक का रूप दिया जो आपके हाथ में है।"

संभवतः इसीलिए भीष्म साहनी ने यह नाटक हिंदी के प्रख्यात साहित्यकार निर्मल वर्मा को समर्पित किया है। हानूश कुल मिलाकर तीन अंकों का नाटक है। लेखक ने इस नाटक के पहले अंक में एक दृश्य, दूसरे अंक में तीन दृश्य एवं तीसरे अंक में दो दृश्यों का विधान किया है। नाटक की शुरुआत होती है कात्या(हानूश की पत्नी) और हानूश के पादरी भाई के संवाद से जिसमें कात्या की चिंता इस बात पर है कि हानूश को घड़ी बनाने की ऐसी धुन सवार हो गयी है कि वह घर गृहस्थी की जिम्मेदारी निभाना जैसे भूल गया है।वह उत्तेजित स्वर में कहती है कि -"जो आदमी अपने परिवार का पेट नहीं पाल सकता,उसकी इज्जत कौन औरत करेगी?...सारा वक्त घड़ी बनाने की धुन उस पर सवार रहती है ।उसी की ठक्- ठक् में लगा रहता है।... अब मुझसे और बर्दाश्त नहीं हो सकता।" असल में हानूश एक मामूली कुफ़्लसाज (ताला बनाने का मिस्त्री) है। इस पर हानूश का पादरी भाई कात्या को दिलासा दिलाते हुए कहता है कि –"घबराओ नहीं कात्या यह उसके लिए मुश्किल दिन हैं,अगर यह कामयाब हो गया तो तुम्हारी सब परेशानियां दूर हो जाएंगी । अगर हानूश के हांथ से घड़ी बन गई तो महाराज इसे मालामाल कर देंगे।इसकी शोहरत दुनिया भर में फैलेगी ।यह क्या छोटी सी बात है? महाराज इसे अपना दरबारी तक बना सकते हैं।" इस बात पर कात्या बिदक जाती है और कहने लगती है कि पिछले दस सालों से मैं यही सुन रही हूं।साथ ही साथ वह अपने छोटे बच्चे की मौत का भी उलाहना देती है। दरअसल नाटक के प्रथम अंक में हानूश के संघर्षमय जीवन और उसके परिवार की स्थिति को बड़ी नाटकीय दृष्टि से प्रस्तुत किया गया है। हानूश पर घड़ी बनाने की सुध इस तरह सवार है कि वह अपना मूल काम ताला बनाना एक तरह से छोड़ चुका है इससे उसकी पत्नी कात्या को घर की बुनियादी जरूरतों को पूरा करने में बड़ी कठिनाई का सामना करना पड़ता है। हानूश का पादरी भाई हानूश को समझाने का प्रयास करता है कि क्यों घड़ी बनाने की वजह से अपने घर परिवार को मुसीबत में रखे हों क्यों जब दुनिया में कोई घड़ी नहीं थी तब भी तो दुनिया

मुसीबत में रखे हों क्यों जब दुनिया में कोई घड़ी नहीं थी तब भी तो दुनिया का व्यापार चलता था ना। एक तुम्हारे घड़ी बनाने या ना बनाने से दुनिया का काम- धंधा रुक थोड़ी ना जाएगा। इस पर हानूश कहता है कि आप मेरे बड़े भाई हैं आपके मुझपर बड़े अहसान हैं आप बेशक मेरे काम का मज़ाक़ उड़ा सकते हैं।

बहरहाल, नाटक क्रमशः आगे बढ़ता है और हानूश सत्रह साल की अनवरत मेहनत के बल पर आखिरकार मीनारी घड़ी बना लेता है, लेकिन घड़ी बनने के बाद उसे लगाने को लेकर काफी जद्दोजहद होती है। नगरपालिका वाले दस्तकार चाहते हैं कि घड़ी नगरपालिका पर लगे एवं गिरजे वाले चाहते हैं कि घड़ी गिरजे पर लगे।लेकिन घड़ी बिना महाराज की इजाजत के बगैर नगरपालिका की मीनार पर लगा दी जाती है।जिस पर महाराज ने हानूश को सशंकित दृष्टि से देखा और कहा कि –".. मगर इस आदमी का कोई ऐतबार नहीं है।सत्रह साल तक यह घड़ी बनाता रहा और हमें इसकी खबर तक नहीं हुई। चुपचाप इस घड़ी को नगरपालिका पर लगा दिया गया, हमें बाद में खबर दी गई। हमें उस वक्त बताया गया जब घड़ी लग चुकी थी। ऐसे आदमी पर कड़ी निगरानी रखने की जरूरत है।" इस पर हानूश महाराज को यकीन दिलाता है कि हुजूर मेरा कोई दूसरी घड़ी बनाने का इरादा नहीं है पहले ही मैंने अपने जीवन के सत्रह बहुमूल्य वर्ष एक घड़ी बनाने में खर्च कर दिए हैं। राजा ने गुस्से में अपना हुक्म सुनाते हुए कहा कि -" इसे एक हजार सोने की मोहरें दे दिए जाएं इसका महीना बांध दो और यह घड़ी की देखभाल किया करे।आज से इसका रुतबा एक दरबारी की तरह होगा।यह हमारे दरबार में बैठा करेगा।...इस आदमी को और घड़ियां बनाने की इजाजत नहीं होगी। इस हुक्म पर अमल करवाने के लिए हानूश कुफ्लसाज को उसकी आंखों से महरूम कर दिया जाए। उसकी दोनों आंखों निकाल दी जाएं। उसकी आंखें नहीं होंगी तो और घड़ियां नहीं बना सकेगा।" इतना सुनते ही हानूश का चेहरा जर्द पड़ गया।वह कहता रहा मालिक मुझपर यह जुल्म न करें मुझे जिंदा दफना दो

गया।वह कहता रहा मालिक मुझपर यह जुल्म न करें मुझे जिंदा दफना दो ,मगर मुझे अंधा नहीं बनाओ।

तीसरे अंक तक कुल मिलाकर लगभग दो वर्ष बीत जाने के बाद हानूश की बनायी घड़ी के शहरवासी अभ्यस्त हो चुके हैं ।उसकी स्थिति की विडम्बना इस बात पर है कि उसे एक ओर अंधा और दूसरी ओर राजदरबारी बना दिया गया है।इस वजह से वह और भी अकेला हो गया है। उसके स्वभाव में अवसाद और कटुता आ गई है।उसका घर अब और आरामदेह और सुविधायुक्त हो गया है। लेकिन उसका मानसिक संतुलन अस्थिर हो गया है। हानूश का दोस्त ऐमिल हानूश की पत्नी कात्या से कहता है कि यहां रहना हानूश के लिए नरक भोगने के बराबर है।हर बार जब घड़ी बजती है तो उसके दिल पर छुरियां चलतीं हैं कात्या।कल फिर उसने घड़ी पर पत्थर फेंका था। हानूश के लिए यहां से चले जाना जरूरी है उसे ऐसी जगह पर ले जाना चाहिए जहां वह घड़ी की आवाज ही न सुन पाए।इस पर कात्या कहती है उसकी जान घड़ी में ही है।

नाटक में एक दिलचस्प वाकया तब आता है जब एक समय बाद हानूश की घड़ी बंद हो जाती है। तो सरकारी अधिकारी हानूश को लेने उसके घर पहुंचते हैं।वे हानूश को बताते हैं कि बादशाह सलामत इस पर बहुत नाराज़ हैं क्योंकि घड़ी को देखने के लिए दूर- दराज से बहुत लोग आते हैं। घड़ी के कारण शहर में यात्रियों का तांता लगा रहता है, घड़ी बंद हो जाए तो रियासत को बहुत नुकसान उठाना पड़ेगा। हानूश बड़े भावुक स्वर में कहता है कि जब से मेरी आंखें नुचवा दीं गई हैं, मैंने घड़ी को नहीं देखा है, केवल उसकी आवाज सुनी है। आगे वह बड़ी मार्मिक बात कहता है कि घड़ी बन सकती है, घड़ी बंद भी हो सकती है। घड़ी बनाने वाला अंधा भी हो सकता है,मर भी सकता है। अंततः हानूश पुनः अपनी अंधी आंखों से कुछ लोगों के सहयोग से घड़ी ठीक करने में कामयाब हो जाता है और कहता है कि मुझे विश्वास है अब घड़ी बंद नहीं होगी। घड़ी की टिक-टिक से सभी आश्चर्यचकित हो जातें हैं।

कुल मिलाकर इस नाटक के माध्यम से भीष्म साहनी ने एक कलाकार की सृजन की अदम्य अकुलाहट उसके जीवन संघर्ष,सत्ता के सामने उसकी निरीहता के साथ ही सत्ता के क्रूर चरित्र को भी उजागर करने का महत्वपूर्ण उपक्रम किया है। नाटक की भाषा नाटकीय तत्वों के अनुरूप है। नाटक की भाषा में भीष्म साहनी ने अनेक संशोधन भी किए हैं जिसे उन्होंने भूमिका में स्पष्ट किया है।अनेक जगह सूक्ति वाक्यों का प्रयोग भी दृष्टिगत होता है मसलन, 'पीठ अतीत की ओर और मुंह भविष्य की ओर होना चाहिए' 'हाजिरजवाबी भी बहुत बड़ा गुंण है' 'मुट्ठी भर मिट्टी भी उठानी हो तो बड़े ढेर से उठाओ,छोटे में से नहीं' 'आदमी के मन में स्थिरता होनी चाहिए' आदि।इस तरह यह नाटक आधुनिक हिंदी नाट्य साहित्य की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है।

संदर्भ ग्रंथ -

हानूश - भीष्म साहनी

हिंदी नाटक का आत्मसंघर्ष - गिरीश रस्तोगी

हिंदी नाटक: उद्भव और विकास - डॉ. दशरथ ओझा